IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 02 2022

तत्त्वमसि उपन्यास में आदिवासी समाजजीवन

ममताबेन जगदीशभाई डाभी

शोधछात्रा, गुजराती विभाग
हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी, पाटन

'तत्त्वमसि'

ध्रुव भट्ट का बहुचर्चित और प्रसिद्ध उपन्यास है। इससे पहले लेखक ने 'समुद्रान्तिके' जैसे उपन्यास देकर व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त की थी लेखकने भारतीय संस्कृति की अन्य संस्कृतियों पर श्रेष्ठता दर्शाना चाहा है या यू कहें कि लेखक का उदेश्य भारतीय संस्कृति की विशिष्टता को दर्शाना है। ऐसा करने के लिए उन्होंने नर्मदा नदी के बेसिन को पृष्ठभूमि के रुप में चुना है। रचनाकार ने भूमिका में लिखा है - 'लेख में मैंने परक्रमा के लोगों, नर्मदा के किनारे रहने वाले ग्रमीणों, मंदिरवासियों, आश्रमवासियों और अपनी कुछ तट यात्राओं के दौरान सुनी गई कहानियों के अलावा अपनी कल्पना को भी शामिल किया है। सथसाली की कहानी पश्चिमी अफिक्रका के डोगन नामक आदिवासी जनजाती की मान्यताओं पर आधारित है।'

जेसा कि पहले उल्लेख किया गया है, रचनाकार भारतीय संस्कृति को केन्द्र में रखकर कहानी की रचना करता है। इस कहानी के केन्द्र में प्रोफेसर रूडोल्फ का शिष्य नायक के रुप में प्रथम पुरुष एकवचन में कहानी प्रस्तुत करता है। यह नायक की नर्मदा के तट पर भटकने की कहानी है। नायक की अनिच्छा के बावजूद प्रो.रूडोल्फ उसे आदिवासी संस्कृति के अध्ययन के उद्देश्य से सुप्रिया आदिवासी शोध केन्द्र पर भेजते है यह यात्रा उसकी भारतीय संस्कृति की यात्रा बन जाती है। नायक जो अनावश्यक रुप से शर्मिला और भारतीय संस्कृति के प्रति कुछ हद तक तिरस्कार पूर्ण है कहानी के अंत में भारतीय संस्कृति का प्रेमी बन जाता है। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए की भारतीय संस्कृति की चर्चा बहुत समय से होती आ रही है आर आगे भी होती रहेगी। कभी-कभी तो अंध न्याय भी देखने को मिलता है।

भारत में रहनेवाले आदिवासियों की संस्कृति को बेशक भारतीय संस्कृति ही माना जाना चाहिए लेकिन उपन्यासकार आदिवासी संस्कृति केक साथ हिंदू संस्कृति को मिलाते नजर आते हैं। यूरोप में पढे कथाकार की मूल मातृभूमि गुजरात के कच्छ का कोइ सुदूर गाँव है। उनके पिता का देहांत हो गया था जबकि उनकी माँ मुंबई में काम कर रही थी। इसलिए कथाकार को उनकी नानी के घर में रखा गया है। जो कि शह रमें पले बढ़े बच्चे को गाँव के माहोल में ढलना नहीं आता था, उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

रहता था। इसलिए उसे उसके पिता के साथ वापस शहर ले जाया गया। वहां से वह कथाकार कथक सिखने विदेश चला गया और वहां दिल से विदेशी बन गया।

वहां उसकी लूसी नाम की एक प्रेमिका भी है और जब प्रो.रूडोल्फ उसे भारत जाने का सुजाव देते है। तो लूसी अलग होने के विचार से दुखी होती है। वह अपने दोस्त जिम के एक विशिष्ट स्थान पर जाने के सुझाव को स्वीकार नहीं करता है। प्रोफेसर रूडोल्फक हानी कथक को आदिवासियों के बीच रहने, उनके दैनिक मामलों को समझने और उन पर रिपोर्ट भेजने का काम सौंपते हैं। लेखक को विश्वास हैं कि ऐसी स्थिति से जल्द से जल्द बच नीकलना मुश्किल नहीं होगा। मध्यप्रदेश के भोपाल स्टेशन तक पहुंचने के लिए मुंबई से निकले कथक को नर्मदा नदी के पुल को पार करते समय पहली बार भारतीय संस्कृति की विशिष्टता का अनुभव होता है। यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि इस कहानी के लेखक और नायक, जिसमें प्रथम-व्यक्ति एकवचन कथात्मक संरचना है, अलग नहीं है। रचनाकार कथक है, जब पुर्वाने नर्मदा को एक सिक्का अर्पित किया, तो उसे अपनी दादी द्वारा वर्षो पहले कहे गए शब्द याद आ गए -

"हे नर्मदा मां मेरे भतीजे की रक्षा करो" कथक ने यह भी देखा कि ऊपर की बर्थ का यात्री पिछली बर्थ पर कम्बल बिछाकर खड़ा होकर प्रार्थना कर रहा था, जबकि पीछला यात्री एक छोर पर बैठकर माला फेर रहा था। एक ही बर्थ पर आमने-सामने बैठे हो अलग अलग धर्मो के लोग अपनी अपनी प्रार्थना कर रहे थे। अलग अलग रीति-रिवाज, बिल्कुल अलग-अलग परिस्थितियों में पले-बढे, फिर भी न जाने क्यों कथक को ऐसा लग रहा था कि दोनो में कुछ समानता है। कथक के मन में यह सवाल उठा कि इतनी भिन्नताओं के बावजूद यह राष्ट्र कैसे सुखपूर्वक रह सकता है ? अनेक प्रश्नो, झगडे, विषमताओ और विवादो के बावजूद यह देश हजारो वर्षो से एक और अक्षुण्ण रहा है। इसका रहस्य क्या है ? और इसका उत्तर कथक को इस देश के सामान्य लोगो के संपर्क से ही मिलता है।

(भोपाल पहुचने के बाद वह पहली बार परिवर्तित डिब्बे में आदिवासी समुदाय से मिलता है। ट्रेन की यात्रा के दौरान, आरक्षित डिब्बे में नए यात्री पहुंचे, अर्धनग्न, तीर के निशान के साथ। वे इतने शर्मिंदा थे कि वे सीटो पर भी नहीं बैठ पा रहे थे। भीड़ में एक छोटी लड़की खिड़की से बाहर देखते हुए कुछ गाना गा रही थी। कथक को आश्चर्य हुआ कि यह छोटी लडकी, जिसे कई कठिनाईयो के बीच पर्याप्त कपडे और भोजन भी नहीं मिल रहा था, इतनी खुश क्यों दिख रही थी ? शायद उसकी खुशी की परिभाषा मेरी खुशी की परिभाषा से अलग थी। उस छोटी लडकी का नाम पुरिया था। जब कथक को पुरिया, बिट्टुबंगा, रामबली, बाबरियो कमलाबा, जोगा आदि आदिवासियों के संपर्क में लाया जाता है, तभी

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Iss 02 2022

आदिवासी बोली, रीति-रिवाज, भावनाए और उनकी जीवनशैली को समझा जा सकता है। बिट्टूबंगा नाम से मशहूर दो आदिवासी भाई है। ऐसा लगता है जैसे दो शरीरो में एक आत्मा है। अगर किसी को जंगल में यात्रा करनी है, तो उसे बिट्टूबंगा की मदद लेनी पडती है। बंगा के अविवाहित रहने के पीछे एक दिलचस्प घटना जिम्मेदार है। बंगा को लक्ष्मी से प्यार हो गया था। लक्ष्मी के मातापिताने शर्त रखी थी कि अगर वह सौ मुर्गिया लेकर आएगी तो वह लक्ष्मी की शादी बंगा से कर देगा। बंगा को तीन महीने में इतनी मुर्गिया लानी थी। इसी बीच नारानियो बीच में आ गया।

नाराणियों ने कहा कि वह रेलवे में कर्मचारी है और उसने लक्ष्मी से शादी तय कर दी। दरअसल नाराणियो वहां रेलवे के स्लीपर बदलने वाले ठेकेदार के तौर पर काम करता था। उसे रेलवे का कर्मचारी नही माना जाता था। अपनी बेटी की खुशी का ख्याल करते हुए लक्ष्मी के पिता ने उसकी शादी रेलवे कर्मचारी नाराणियो से तय कर दी। इसके अलावा उसे डेढ से दो महीने में सौ मुर्गियां लानी थीं। उसे का'भाई पाटा से ब्याज समेत एडवांस रकम मिल जाती। लक्ष्मी की शादी नाराणियों से हो गई। बंगा ने कोई बहस नहीं की। वह लक्ष्मी के पिता और नाराणिया से सिर्फ एक बार मिला था। उन्हें साफ-साफ बताया कि अगर लक्ष्मी भूख से मर गई, अगर उसे कपडे नहीं मिले, अगर नाराणिया ने लक्ष्मी को किसी तरह का दर्द दिया तो बंगा नाराणिया और लक्ष्मी के माता-पिता का सिर फोड़ देगा।

बंगा को बाघ ने मार डाला था। बंगा की मौत से गुस्साए बिट्टू ने बाघ को मारने का फैसला किया। जब वेन विभाग के आदमखोर बाघ को पकडने के कई प्रयास विफल हो जाते हैं, तो एक दिन बाघ का सिर बित्तुबंगा द्वारा बनाए गए तालाब के गेट के फ्रेम से फंस जाता है। जिस तरह एक बिल्ली का सिर बर्तन में जा सकता है, लेकिन बार नहीं निकल सकता, यह आदमखोर बाघ एक जाल में फंस गया है। वह सभी को बताता है कि अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद कई यातनाएं सहकर बड़े हुए बंगा को मारनेवाली बाघ कुल्हाडी का एक बार का मेहमान है। दूसरे उसे समझाते हैं, लेकिन वह बदला लेने की ठान लेता है, तभी सुप्रिया कहती है, "जैसा तुम चाहो करो।" लेकिन सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, बिट्टू रात में सभी के सोते समय बाघ को जाल से मुक्त कर देता है। क्योंकि बिट्टू को पहले ही पता चल चुका था कि फंसा हुआ जानवर एक बाघिन है और वह उसके बच्चो को अनाथ नहीं करना चाहता था। लेकिन कहानीकार के शब्द, "तुमने क्या किया, बिट्टू ?" ने बिट्टू को भ्रमित कर दिया। बाघिन को छोडना या अपने भाई की हत्या का बदला लेना, इन दो विकल्पों में से उसने आखिरकार दो शावकों की

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

माँ को छोडकर अपना धर्म निभाने का फैसला किया। लेकिन क्या होगा अगर मृतक बंगा की आत्मा को पता चल जाए ? एक धर्म वह खतरे में था। इसलिए वह चर्च जाकर प्रायश्चित करना चाहता था।

दरअसल, लेखक ने यहाँ पर इस बात का स्पष्ट संकेत दिया हे कि प्रकृति के नियमों के तहत जीने वाले आदिवासियों को सुधारना उन्हें बर्बाद करने जैसा है। आदिवासियों की संस्कृति दुनिया के प्रचलित धर्मो से भी पुरानी संस्कृति है। हालाँकि वे धर्म के विरोधी नहीं है, लेकिन धर्म से परे रहने का ज्ञान और समझ इन आदिवासियों में स्वाभाविक रूप से निहित है।

आदिवासियों का आतिथ्य और मानवता उनकी अनूठी विरासत है। कथक ने छतियाटोला की अपनी यात्रा के दौरान इसका अनुभव किया। जिसने छतियाटोला के खंडहर कथक ने छतियाटोला की अपनी यात्रा के दौरान इसका अनुभव किया। जिसने छतियाटोला के खंडहर नहीं देखे हैं वह समझ नहीं सकता कि गरीबी क्या होती हैं। छतियाटोला के आदिवासीयों को देखने वाला ही समझ सकता है कि कई दिनों तक कंदमूल खाकर जीना कैसा होता है। सुप्रिया कथक को एक अकेले बूढ़े आदिवासी व्यक्ति की झोपड़ी में ले गई जो मानव कंकाल जैसा दिख रहा था। लंगोटी पहने उस बूढ़े व्यक्ति ने कहना शुरु किया, ‘‘मुझे पता है, मेरे प्यारे, खाली पेट में कितना दर्द होता है, तुम नहीं जानते।’’(पृ.६४)

बेमन से सुप्रिय और गंदा फकीर उसकी झोपडी में चले गए। आदिवासी खुशी से नाच उठा, ‘तु तीर्थ को गया, अब तू तीर्थ को गया। बेचारे बूढ़े के घर में खाने को कुछ नहीं था, इसलिए वह महुदा शराब का एक बर्तन और एल्युमिनियम का कटोरा ले आया। उसके चेहरे पर दर्द था। वह कहने लगा, ‘मेरे घर में कुछ नहीं है। लेकिन मै खाली पेट जाता हूं। पाप लगता है।’

चूँकि उसके पास अपने घर आये अतिथि को खिलाने के लिए कुछ भी नहीं था, इसलिए उसके पास जो कुछ भी था, उसे देकर वह अपना आतिथ्य दिखाने के लिए उत्सुक था। यहां तक कि उनके बीच रहने वाली उनकी हमदर्द सुप्रिया भी उनके आतिथ्य को नहीं समझ पाई। उसके अंदर का समाज सुधारक फूट पड़ा। उसने कहा, ‘चाहे मैं मर जाऊँ, लेकिन अपने मधुरो को नहीं छोडुंगी।’ सुप्रिया ने बूढ़े से नमक मांगा और नमक के दो दाने अपने मुंह में डालकर बूढ़े आदिवासी के आतिथ्य को बरकरार रखा। लेकिन सही मायने में बूढ़े आदिवासी के आतिथ्य को उस आदिवासी गंडू फकीर ने बरकरार रखा था। उसने बूढ़े द्वारा दिए गए महुड़ो को पी लिया। इतना ही नहीं, सुप्रिया ने अनुरोध किया कि आज हमारे पास आपकी रोटी की व्यवस्था है, तब गंडू फकीर ने कहा कि अगर में आपके हार से खोता हूं, तो इसका मतलब है कि बूढ़े ने हमे भुखा रखा है। गंडु फकीर कह रहा था कि मैंने बूढ़े के घर में जो कुछ था सब खा लिया

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

है। यह आदिवासीयों का आतिथ्य है। आतिथ्य की इस गहराई को श्रेष्ठी भी नहीं समझ पाया जबकि गंडु फकीर जानता है कि काली गरीबी में तडप रहे आदिवासीयों के पेट में अन्न है। लेकिन कई तरह के पकवानों में डूबे गैर-आदिवासीयों के लिए यह समझना मुश्किल है।

आश्रमवासियों के लिए भोजन तैयार करते समय कमला अपनी काठी के किनारे से झाक पोंछती रहती थी, मानो बीमार हो। कथक ने सुझाव दिया कि उसे हटा दिया जाए, लेकिन सुप्रिया ने ऐसा नहीं किया। कुछ दिनों के बाद कमला रोबसाली का फर्श धोती और साफ करती। कथक ने प्रश्न का उसने जो उत्तर दिया, वह आज भी एक आदिवासी महिला की अंतरात्मा का परिचय देने वाली आवाज है। उसने टूटी-फूटी भाषा में समझाया कि - "लड़कियां अपने माता-पिता को छोडकर यहां छात्रावास में रहने आएगी। छोटी-छोटी लडकियां, जो कभी घर से बाहर कहीं और रहने के लिए नहीं गई, शाम को अपने घर की देखभाली किए बिना कुछ समय कैसे रह सकती है ? उन्हें छात्रावास में शाम पसंद नहीं है। इसलिए सभी छात्र बाहर आकर खेलेंगे और इन पेंडो के पास बैठेंगे। वे रो भी सकते है। अगर वे यहां सफाई करके बैठने की गह बना दें, तो यह बहुत बड़ा पुण्य का काम होगा और कमला के लिए सुखदायक कार्य होगा। इसीलिए वे बैंच तैयार रखते है। उन्होंने आगे कहा - "मैं माँ नहीं हूँ, लेकिन कोई उपयुक्त है।"

यह पुरिया के चरित्र के लिए किया गया था। लीलाभाई के माध्यम से कथक को पता चला कि पुरिया डायन बन गया है। कथक यह नहीं मानता कि हंमेशा हंसने-खेलने वाला पुरिया अचानक डायन बन गया। सुप्रिया ने समझाया कि डायन बनकर पुरिया ने इन जंगलों में रहने का अधिकार खो दिया है। या तो उसे ये जंगल छोडने होंगे या मौत को गले लगाना होगा। जब सुप्रिया जंगल में पुरिया को मारने के लिए जमा हुई लोगों की भीड़ के पास गई, तो उसने पुरिया की माँ से पूछा, जिसने उसे बताया कि पुरिया की बहन रामबली का बेटा कल से गायब है। सब उसका शोषण कर रहे थे और जब उसने भोर में नदी किनारे पुरिया को बैठे देखा, तो उसके हाथ में एक लडाक था, जिसे सांप ने काट लिया था। रामबली इस डर से भाग गया था कि पुरिया उसे भी मार डालेगा। जब सुप्रिया ने पुरिया को अपने साथ ले जाने की बात की, तो पुरिया की मां, उसके पति और भाई ने उसका विरोध किया - तुम्हें पता है, अगर तुमने मेरा हाथ बंटाया, तो तुम्हें एक चुड़ैल मार डालेगी। मैं तुम्हें कटका के पास ले जाऊँगा। सुप्रिया अच्छी तरह जानती है कि पुलिस के पास इस संकट का समाधान नहीं है। सभी को आश्चर्य हुआ, जब पुरिया ने खुद को डायन घोषित कर दिया। कथक कहता है कि पुरिया रामबली की मान्यता, सभी के जादू-टोने के आरोप और यह कि उसका पति उसके मदद के लिए नहीं आएगा, को स्वीकार कर लेती; लेकिन पुरिया

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

यह स्वीकार नहीं कर सकती थी कि रामबली का पति, पुरिया का देवर, जिसके साथ वह हंसती, खेलती और मौज-मस्ती करती थी, उसका सच्चा दोस्त भी नहीं था। जिस क्षण रामबली के पति ने उसे डायन कहा और उसे अपने बच्चे का हत्यारा माना, उसी क्षण पुरिया ने मान लिया कि वह डायन बन गई है। इतनी छोटी सी बात पर यह आदिवासी लडकी क्रुर मौत का सामना करने को तैयार हो गई। अगर पुरिया खुद ही खुद को डायन मानने लगी और भीड़ का विरोध भी नहीं किया, तो कोई और उसे कैसे बचा सकता था ? भीड़ ने उसे पकड लिया और उसे खडी ढ़लाने से नीचे खींच लिया। न तो सुप्रिया, न कथक और न ही बित्तुबंगा उसे बचाने की कोशिश कर सके। बित्तु ने बताया कि चूंकि रात में राक्षसी शक्ति मजबुत होती है, इसलिए शाम से पहले डायन को मारने की तैयारी की गई थी। वह नदी के किनारे अपनी अंतिम सांस लेगी, जहां उसे पाया गया था। वह उत्सुकता का विषय है कि आतिथ्य करने के लिए अपना भजन दूसरों को देने वाले और ब्याज पर उधार लिए गए पैसे को वापस करने के लिए खुद को बलिदान करने वाले इन जनजातियों में जादू टोना जैसी अमानवीय प्रथा कैसे आई होगी। कहानी में लेखक ने पुरिया को बचाया है और कहानी को रंगीन बनाया है। हकीकत, हकीकत से ज्यादा भयानक है। सुप्रिया के निर्देश पर जंगल में रहने वाली झुरको कालेवाली मां नामक दुष्ट फकीर को समय में वापस लाया गया।

उनके हस्तक्षेप से पुरिया बच गए। कथक कहते हैं - 'आसमान अचानक बरसने लगा, मानो अज्ञानी आदिवासीयों के निर्दोष अपराधों को धोने के लिए।'(पृ.९९)

आदिवासीयों की मासूमियत के कुछ दृश्य कहानी को जीवंत बनाते है - जब कथक वैदराज से मिलकर लौट रहे थे, तो उन्होंने जो लिडीवरी वैन किराए पर ली थी उसका ड्राइवर सड़क पर किसी आदिवासी को आते-जाते देखकर हाथ उठाता था और कथक से कहता था - "मैं आ रहा हूँ, आप लोगों मैंने सोचा, आज मैंने ड्राइवर साब को सलाम किया।"(पृ.७९) रात की पाठशाला में टेम्पूडियो ध्यान से लिख रहा था। कथक ने पूछा, 'तेमुडिय क्या लिखता है ?' टेम्पूडियो ने शरमाते हुए कहा, 'नहीं मैं चित्र बना रहा हूँ।' ये आदिवासी लिखना नहीं जानते । ये सिर्फ चित्र बनाना जानते हैं। कई बार समझाने पर भी ये सभी यही कहते कि 'मैं चित्र बना रहा हूँ' या मैं अपना नाम बना रहा हूँ। टेम्पूडियो के नाम को लेकर भी कथक एक रोचक घटना सुनाता है। टेम्पूडियो की माँ अन्य आदिवासीयों के साथ शहर गई थी। लौटते समय वे सभी एक टेम्पा मैं बैठे और यात्रा के दौरान टेम्पा में इस लडके का जन्म हुआ। इसलिए इसका नाम टेम्पूडियो रखा गया।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved,

कहानी मे उपमाओं का भी प्रयोग किया गया है। कुछ रोचक घटनाओं और प्रसंगो के माध्यम से भारतीय संस्कृति के सार को स्थापित करने का प्रयास करने वाला लेखक एक संस्कृति का पक्षपाती बन गया है। पक्षपाती होना कोई पाप नहीं है, लेकिन जब वह षडयंत्र उजाग़र होता है, तो कला में कई सवाल उठते हैं।

विदेश में अपने पिता के साथ रहने वाला कथक अनावश्यक रुप से पश्चिमी संस्कृति की तुलना भारतीय संस्कृति या परंपराओं से करता है और उसे नीचा दिखाता है। चूंकि यह एक कहानी है, इसलिए कल्पना तत्व की उपस्थिति स्वागत योग्य मानी जाती है। सातसाली और कलिवाली का आख्यान जोड़कर कहानी की रंगीनता बढाई गई है, जो भारतीय आदिवासी परंपरा में नहीं, बल्कि अफ्रिकी परंपरा में है। इससे कहानी की कुछ गुत्थियां सुलझती हैं, कार्रवाई में तेजी आती है, लेकिन लयबद्ध व्यवस्था का विरोधाभास उजागर होता है। आदिवासियों के अलावा गैर आदिवासी पात्रों जैसे सुप्रिया, खुद कथक, गणेश शास्त्री, कीकु वैद, पार्वतीमा, गुप्त शेठ, लक्ष्मण शर्मा, ननिमा आदि को आदर्शो के रंग में रंगा गया है। कहानी में एक जगह लेखक ने कथक से कहलवाया है, 'यह देश अध्यात्म पर खड़ा है। धर्म पर नहीं।'(पृ.५४)

इन लोगों के मन में धर्म की अपेक्षा अध्यात्म की जड़े अधिक गहरी हैं। अन्यथा ये लोग इतने मजबुत नहीं होते।(पृ.११७)

इस प्रकार धर्म की अपेक्षा अध्यात्म की उच्च स्थान दगेने वाले लेखक ने स्वयं अध्यात्म और धर्म को भ्रमित कर दिया है। ज्योतिष और परिक्रमा जैसी परंपराओं को संस्कृति के साथ जोडकर अपनी प्रासंगिकता स्थापित कर रहे हैं। यहाँ यह बात ध्यान दगेने लायक है कि कहानी में जिस आदिवासी संस्कृति का बड़ा हिस्सा है, वह अनूठी संस्कृति है। उसे भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग माना जा सकता है। लेकिन उस भारतीय संस्कृति को हिंदु संस्कृति कहना लेखक की दृष्टि की सीमाओं को दर्शाता है। संस्कृति की रंग-बिरंगी प्रस्तुति गुजराती पाठकों को बहुत पसंद आती है। यही कारण है कि उपन्यास को इतनी लोकप्रियता मिली है। यह आश्चर्य की बात होगी कि संकीर्ण सोच वाले गुजराती पाठक को ऐसी कहानी पसंद न आए जिसमें बच्चों की गोली में मिलने वाली जड़ी-बूटी का मिश्रण बहुत अधिक मात्रा में हो।

❖ **संदर्भ :**

१. लेखक - ध्रुव भट्ट, प्रथम संस्करण : १९९८, पुनःमुद्रण : २००१, २००३